पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की मूल्यपरक् शैक्षिक विचारधारा की प्रासांगिकता का नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

शिक्षा शास्त्र विषय में

पी–एच०डी०
उपाधि हेतु
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ
को प्रस्तुत
शोध कार्य की
रूपरेखा

IIMT UNIVERSITY
MEERUT

शोध पर्यवेक्षकः

डा. संजीव कुमार
प्रोफेसर, कॉलिज ऑफ एजुकेशन,
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ (उ.प्र.)

शोधार्थिनी

नेहा शर्मा

वर्षः 2021

—: शोध केन्द्र :—
कॉलिज ऑफ एजुकेशन,
आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है क्योंकि यह व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास का आधार प्रदान करती है। किसी भी समाज की प्रगति और राष्ट्र की उन्नति शिक्षा की गुणवत्ता और उसकी दृष्टि पर निर्भर करती है। शिक्षा केवल रोजगार प्राप्ति का साधन नहीं है बल्कि यह मानव निर्माण और चरित्र निर्माण की आधारशिला है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को साधन नहीं बल्कि साध्य माना गया है और इसके माध्यम से समाज में ऐसे नागरिक तैयार करने की अपेक्षा की गई है जो आत्मनिर्भर, कर्तव्यनिष्ठ, मूल्यपरक, सांस्कृतिक चेतना से संपन्न और राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित हों। किंतु आधुनिक युग में शिक्षा के व्यावसायीकरण, प्रतिस्पर्धा और भौतिकतावादी दृष्टिकोण ने शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को कहीं न कहीं पीछे धकेल दिया है। इस कारण से शिक्षा में मूल्य–संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। ऐसे समय में जब समाज में नैतिक पतन, हिंसा, भ्रष्टाचार, असमानता, प्रदूषण, असंवेदनशीलता और भौतिकवादी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, तब पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जैसे महान विचारक और समाज सुधारक की शैक्षिक विचारधारा विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाती है।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य, जो अखिल विश्व गायत्री परिवार और शांतिकुंज हरिद्वार के संस्थापक थे, उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण और समाज परिवर्तन का सबसे सशक्त साधन माना। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि इसका मूल उद्देश्य होना चाहिए "मनुष्य को मनुष्य बनाना।" उन्होंने शिक्षा के माध्यम से ऐसे आदर्श नागरिक तैयार करने की आवश्यकता पर बल दिया जो ईमानदार, कर्तव्यपरायण, अनुशासित और चरित्रवान हों। आचार्य ने कहा कि शिक्षा में यदि मूल्यपरकता और नैतिकता का अभाव होगा तो समाज भौतिक रूप से समृद्ध होकर भी आध्यात्मिक और

नैतिक दृष्टि से निर्धन बना रहेगा। आचार्य ने शिक्षा को तीन प्रमुख आयामों से जोड़कर देखाकृ पहला, ''चरित्र निर्माण''य दूसरा, ''व्यक्तित्व विकास''य और तीसरा, ''राष्ट्र निर्माण''। उनके अनुसार शिक्षा तभी सार्थक होगी जब यह व्यक्ति को आत्मानुशासन, परोपकार, सहयोग, करुणा, साहस, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मानवीय मूल्यों से संपन्न बनाए।

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की शिक्षाविचारधारा और नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों में गहरा सामंजस्य है। आचार्य ने शिक्षा में ''सत्संस्कार, चरित्र निर्माण और मूल्यपरकता'' को प्राथमिकता दी, और नीति 2020 में भी "Value Based Education" की अवधारणा को प्रमुखता से रखा गया है। आचार्य के अनुसार शिक्षा विद्यार्थियों में "संयम और आत्मनियंत्रण" की क्षमता पैदा करे जिससे वे प्रलोभनों और गलत प्रवृत्तियों से बचकर जीवन को सार्थक दिशा में आगे बढ़ा सकें। इसी प्रकार NEP–2020 भी यह कहती है कि शिक्षा विद्यार्थियों में "Ethics and Human Values" का विकास करे ताकि वे समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

यदि हम ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल पद्धतिकृमें भी यही मूल्यपरक दृष्टिकोण रहा है। उस समय शिक्षा का लक्ष्य था व्यक्ति को आत्मज्ञान, आत्मसंयम और कर्तव्यपालन के लिए तैयार करना। किंतु आधुनिक शिक्षा पद्धति में जब से पाश्चात्य प्रभाव बढ़ा, शिक्षा अधिकतर ज्ञानार्जन और नौकरी–प्राप्ति का साधन बन गई। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस स्थिति की आलोचना करते हुए कहा कि शिक्षा तभी सार्थक है जब यह व्यक्ति के भीतर छिपी संभावनाओं को जगाए और उसे समाजोपयोगी बनाए। यह विचार नई शिक्षा नीति 2020 के उस सिद्धांत से मिलता है जिसमें कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में उनकी "Unique Potential" को विकसित करना है।

आज समाज के समक्ष जो चुनौतियाँ हैं जैसे नैतिक पतन, हिंसा, पर्यावरण संकट, तकनीकी दुरुपयोग, मानसिक असंतुलन और आत्मकेंद्रित प्रवृत्तियाँ इन सबका समाधान मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने कहा था कि यदि शिक्षा में मानवीय मूल्यों और नैतिकता का समावेश होगा तो समाज की अनेक समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी। इसी प्रकार NEP–2020 भी कहती है कि शिक्षा विद्यार्थियों को "जिम्मेदार, जागरूक और संवेदनशील नागरिक" बनाने में सक्षम हो।

यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि आचार्य की शिक्षा विचारधारा केवल अतीत की धरोहर नहीं है बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी उतनी ही उपयोगी और प्रासंगिक है। नई शिक्षा नीति में "Holistic and Multidisciplinary Education" पर जो बल दिया गया है, वह आचार्य के उस विचार से जुड़ता है जिसमें उन्होंने कहा था कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास न करके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक सभी आयामों का विकास करे।

समाज में शांति, सद्भावना और सहयोग तभी स्थापित हो सकते हैं जब शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना विकसित हो। आचार्य ने अपने चिंतन में इस बात पर बल दिया कि शिक्षा का उद्देश्य संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊपर उठकर व्यक्ति को विश्व–मानव बनाने का होना चाहिए। NEP–2020 में भी वैश्विक नागरिकता और सांस्कृतिक आदान–प्रदान की बात की गई है। इससे यह स्पष्ट है कि आचार्य की दृष्टि और नई शिक्षा नीति की दिशा दोनों ही एक–दूसरे के पूरक हैं।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में शिक्षा के स्वरूप और उसके उद्देश्यों पर गहन विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि आज शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना और जीवन–यापन करना माना जाने लगा है जबकि शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। यही कारण है कि शिक्षा की मूल्यपरक दृष्टि पर पुनः बल देने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन या पेशागत दक्षता का साधन न मानकर इसे जीवन–निर्माण और चरित्र–निर्माण की आधारशिला बताया है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जो राष्ट्र और समाज के प्रति उत्तरदायी हों, अपने जीवन में नैतिकता, मानवीयता, करुणा, सहानुभूति, सहयोग और ईमानदारी जैसे मूल्यों का पालन करते हों। जब हम नई शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन करते हैं तो उसमें भी यह स्पष्ट दिखाई देता है कि शिक्षा को केवल रोजगारपरक बनाने के बजाय मूल्याधारित, संस्कृति–संपन्न, चरित्र–निर्माण और जीवन–कौशलों से युक्त बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है इसलिए आचार्य की शिक्षा–दृष्टि और नई शिक्षा नीति का तुलनात्मक अध्ययन करना समय की आवश्यकता है।

समाज में बढ़ते भौतिकतावाद, प्रतिस्पर्धा और नैतिक पतन के दौर में शिक्षा के माध्यम से मूल्य–स्थापना करना अत्यंत आवश्यक है। आज हम देखते हैं कि शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और ज्ञान की वृद्धि तो हुई है परंतु मनुष्य के भीतर संवेदनशीलता, मानवीय दृष्टिकोण और सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव कमजोर पड़ रहा है। इस समस्या का समाधान केवल मूल्य–परक शिक्षा से ही संभव है। आचार्य के विचार हमें बताते हैं कि शिक्षा का प्रयोजन विद्यार्थियों को केवल परीक्षा पास कराने तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें अच्छे नागरिक, कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी, संवेदनशील अभिभावक और आदर्श मानव बनाने का होना

चाहिए। नई शिक्षा नीति 2020 में इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल, भारतीय संस्कृति, कला–संस्कार और पर्यावरणीय चेतना को शामिल किया गया है, जिससे विद्यार्थी केवल बौद्धिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी सक्षम बन सकें।

इस विषय की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि आधुनिक समय में युवाओं में दिशाहीनता, नशाखोरी, हिंसा, आत्महत्या की प्रवृत्ति, असंयमित जीवनशैली और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। यदि शिक्षा में मूल्य–परकता का अभाव रहेगा तो यह समस्याएँ और भी गहरी होती जाएँगी। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों के आलोक में यदि हम शिक्षा में संयम, सदाचार, सेवा–भावना, आत्मानुशासन, स्वावलंबन और सह–अस्तित्व की भावना का समावेश करेंगे तो विद्यार्थियों में सकारात्मक परिवर्तन आ सकते हैं।

इस विषय की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि आज वैश्वीकरण के प्रभाव से शिक्षा प्रणाली में पाश्चात्य दृष्टिकोण का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है और भारतीय संस्कृति, परंपरा और मूल्यों का स्थान धीरे–धीरे कमजोर होता जा रहा है। इस परिस्थिति में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की मूल्यपरक शैक्षिक दृष्टि हमें भारतीय संस्कृति की जड़ों से जोड़ती है और हमें यह स्मरण कराती है कि वास्तविक शिक्षा वही है जिसमें राष्ट्रीयता, संस्कृति, नैतिकता और मानवीय मूल्य निहित हों। नई शिक्षा नीति 2020 भी भारतीयता और संस्कृति के संरक्षण पर बल देती है। अतः इस संदर्भ में यह अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें यह समझने का अवसर देता है कि किस प्रकार आचार्य की शिक्षा–दृष्टि और नई शिक्षा नीति एक–दूसरे के पूरक बन सकते हैं।

इस अध्ययन का महत्व इस कारण से भी है क्योंकि यह भविष्य के लिए शिक्षण की दिशा तय कर सकता है। यदि हम पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों को शिक्षा नीति और

व्यवहार में शामिल करते हैं तो शिक्षा का स्वरूप अधिक मानवीय, अधिक नैतिक और अधिक समग्र हो जाएगा। इससे शिक्षक केवल पढ़ाने वाले न रहकर विद्यार्थियों के जीवन–निर्माता बनेंगे और विद्यार्थी केवल नौकरी पाने वाले नहीं बल्कि जिम्मेदार नागरिक बन सकेंगे।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

जैन मनीषा (2019)[1] ने *"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"* पर अध्ययन किया और पाया कि – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उनके उच्च नैतिक मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर सार्थक प्रभाव होता है, माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों व निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सार्थक अंतर होता है।

नम्रता एवं अविनाश (2019)[2] ने *''पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का मूल्य–उन्मुखीकरण पर प्रभाव : एक अध्ययन''* किया। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का मूल्य उन्मुखीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव को देखना है। इस अध्ययन में आकस्मिक प्रतिचयन विधि द्वारा प्रज्ञा शिशु मन्दिर, सोंडका, रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से 16 से 25 वर्ष की आयु के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें 30 छात्र एवं 30 छात्राएँ थीं। इस शोध में एक्स–पोस्ट फैक्टो रिसर्च डिजाइन का प्रयोग किया गया और आँकड़ों के संग्रहण के लिए डॉ. जी.पी.शेरी एवं प्रो. आर.पी.वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण टी–परीक्षण द्वारा किया गया तथा परिणामों में यह पाया

गया कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, ज्ञान मूल्यों, आनन्द मूल्यों व शक्ति मूल्यों पर विशेष सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा लोकतांत्रिक मूल्यों, सौन्दर्य ललित कला मूल्यों, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों व स्वास्थ्य मूल्यों पर सामान्य प्रभाव पड़ता है।

देवी संतोष एवं शर्मा शिवाकान्त (2019)[3] ने शिक्षा महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष रुप में पाया कि विज्ञान एवं तकनीकी व वाणिज्य प्रबंधन संकाय के छात्रों के नैतिक मूल्य औसत स्तर के हैं। कला संकाय के छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य उच्च स्तर के हैं। विज्ञान एवं तकनीकी संकाय के छात्रों के सामाजिक मूल्य निम्न स्तर के हैं। वाणिज्य प्रबंधन संकाय के छात्रों के सामाजिक मूल्य औसत स्तर के हैं। विज्ञान एवं तकनीकी तथा वाणिज्य प्रबंधन संकाय के छात्रों के राष्ट्रीय मूल्य औसत स्तर के हैं। शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन में कोई अन्तर नहीं होता।

कुमार योगेश व उपाध्याय सुशील (2019)[4] ने आचार्य श्रीराम शर्मा और स्त्री शिक्षा पर अध्ययन किया और निष्कर्षतः उललेख किया कि श्रीराम शर्मा आचार्य ने स्त्री शिक्षा की जमकर वकालत की। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से स्त्री शिक्षा के लिए अभियान चलाया। आचार्य जी का मानना था कि अगर स्त्री को शिक्षित करना है तो उसके लिए सामान्य प्रयास भर करने से काम नहीं

चलेगा। उसके लिए अधिक प्रयत्न करने होंगे– ''आज की कन्या कल की माँ है, जिसे एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व सँभालना है। देश को सुयोग्य नागरिक देकर अपना कर्तव्य निभाना है। आचार्य श्री का मानना था कि लड़कियों को केवल किताबी शिक्षा देने भर से काम नहीं चलेगा बल्कि लड़कियों को स्वालम्बन की शिक्षा देनी होगी ताकि आधी आबादी अपने पैरों पर खड़ी हो सके। उनका सोचना था कि– ''लड़कियों की शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ नये सिरे से विचार करना पड़ेगा क्योंकि बच्चों की, घर गृहस्थी की जिम्मेदारी सँभालते हुए घर छोड़कर अन्यत्र कठिनाई में ही जा सकती हैं। उन्हें ऐसे ही उद्योग सीखने चाहिए, जिन्हें घर रहते हुए सहायक धन्धे के रूप में आसानी से सम्पन्न किया जा सके''।

यादव उग्रसेन (2019)[5] ने *"शिक्षा के महत्व और मूल्यों पर स्कूल और परिवार का सहयोग का अध्ययन"* पर अध्ययन किया और निष्कर्ष रुप में पाया कि – शिक्षकों को नैतिक मूल्यों को सिखाने का प्रयास करना चाहिए और युवाओं को यह जानने में मद्द करनी चाहिए कि क्या सही है और क्या गलत। मूल्यों की शिक्षा के लिए स्कूलों में वास्तविक शक्ति है। परिवार को स्कूल का भागीदार होना चाहिए क्योंकि माता–पिता के समर्थन के बिना, शिक्षकों के प्रयासों को बाध्य किया जाता है। स्कूल और परिवार की साझेदारी में काम करने पर चरित्र शिक्षा अधिक प्रभावी होती है। सहकारी शिक्षा के लिए चरित्र शिक्षा में हित्धारकों की संयुक्त जिम्मेदारी की आवश्यकता होती है। यह साझेदारी परिवार–स्कूल सहयोग के लिए भी एक दृष्टिकोण है। भूमिका मॉडलिंग, माता–पिता को शिक्षा के मूल्यों से जोड़ना, समांतर पाठ्यक्रम सहयोग के लिए कुछ तकनीकियां हैं।

असवाल भरत सिंह (2017)[6] ने *"मूल्य शिक्षा का जीवन में महत्व एवं आवश्यकता"* पर अध्ययन किया और निष्कर्ष रुप में पाया कि मूल्य संप्रत्यय, अर्थ एवं वर्गीकरण बालक और शिक्षार्थी द्वारा मूल्यों को समझने में सहायक हैं। बालक के व्यवहार में मूल्य परिलक्षित हों, इस प्रकार की कामना सभी शिक्षक करते हैं। लेकिन शिक्षक के व्यवहार में मूल्य परिलक्षित हों, समाज इसकी आशा सभी शिक्षकों से करता है। समय–समय पर शिक्षा आयोग, शिक्षा समितियों तथा मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक व्यक्तियों और विभिन्न विद्वानों द्वारा जो सुझाव प्रस्तुत किए गए उनमें व्यक्ति का सुखद जीवन, मूल्य, समाज, जीवन व्यवहार, मूल्य शिक्षा का जीवन में महत्व तथा आवश्यकता, प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास, देश का विकासवादी लक्ष्य, नैतिकता का विकास तथा भौतिकता, आधुनिकता को जानने की सामर्थ्य, शुद्ध आचरण तथा भौतिकवादी व अध्यायत्मवादी संस्कृति में समन्वयवादी दृष्टिकोण जैसे विचारों पर बल दिया गया है।

पाण्डेय, संतोष कुमार (2017)[7] ने अपने शोध पत्र में निष्कर्ष प्राप्त किया कि आचार्य जी बताते हैं कि ईश्वर की प्रतिच्छाया विभिन्न रूपों में समष्टिगत चेतन सत्ता में समाई हुई है। उसके ''अस्तित्व का प्रमाण ढूँढने के लिए अधिक परिश्रम की आवश्यकता नहीं। विवेक–दृष्टि के अवलम्बन से उसे चाहें, जहाँ चाहे उस रूप में देख सकते हैं एवं उसकी चमत्कारी परिणतियों से अपनी आस्तिकता को पोषण दे सकते हैं।'' इतने बड़े संसार का नियामक परमात्मा सचमुच बड़ा शक्तिशाली है। सत्तावान न होता तो कौन उसकी बात सुनता। दण्ड देने में उसने चूक की होती तो अनियमितता (अस्त–व्यस्तता) और हो

रही होती। उसकी दृष्टि से कोई भी छुपकर पाप और अत्याचार नहीं कर सकता। बड़ा कठोर है वह, दुष्ट को कभी क्षमा नहीं करता।

कुमार प्रवीन एवं बंसल सुरक्षा (2013)[8] ने *"वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में आचार्य श्रीराम शर्मा के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता"* पर अध्ययन किया और निष्कर्ष रुप में पाया कि आचार्य श्रीराम शर्मा जी का शिक्षा दर्शन अत्यन्त सरल एवं व्यवहारिक है। शिक्षा, व्यक्तिगत जीवन, समाज परिवार, एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूरा करे तथा बालक को जीवन की यथार्थता से परिचित कराये। व्यक्ति स्वयं को पहचाने तथा अपने चित्त की वृत्तियों का शोधन करना सीखे तभी शिक्षा पद्धति सार्थक को सकेगी। वर्तमान में शिक्षा से व्यक्ति एवं समाज की अपेक्षायें अधूरी एवं निराशात्मक है। अतः शिक्षा को जीवन की यथार्थता से जोड़े जाने की नितान्त आवश्यकता हैं शिक्षा पर खर्च होने वाले समय, धन, एवं शक्ति का तभी उचित लाभ समाज व राष्ट्र को प्राप्त हो सकता हैं। देश के जीवन में विभिन्न क्षेत्रों और स्तरों पर जो अन्धकार और निराशा हमे घेरे हुए हैं उनमें आशा की किरण आचार्य श्री राम शर्मा के शैक्षिक विचारों के द्वारा ही प्रकाशित हो सकती है।

नम्रता बिहारिया एवं अविनाश बिहारिया (2012)[9] ने "पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का मूल्य–उन्मुखीकरण पर प्रभावः एक अध्ययन" किया। शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन में एक्स–पोस्ट फैक्टो रिसर्च डिजाइन का प्रयोग किया गया और आँकड़ों के संग्रह के लिए डॉ. जी.पी. शेरी एवं प्रो. आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण टी–परीक्षण द्वारा किया गया तथा परिणामों में यह पाया गया कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का

विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, ज्ञान मूल्यों, आनंद मूल्यों व शक्ति मूल्यों पर विशेष सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा लोकतांत्रिक मूल्यों, सौंदर्य ललित कला मूल्यों, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों व स्वास्थ्य मूल्यों पर सामान्य प्रभाव होता है।

भारती गीता (2012)[10] जैन शिक्षा दर्शन एवं बौद्ध शिक्षा दर्शन के सांस्कृतिक एवं शैक्षिक मूल्यों का तुल्नात्मक अध्ययन किया। इस शोध प्रबन्ध के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए – बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन में पुण्य कर्म को सुकर्म माना गया है इसके करने से व्यक्ति के अन्दर मूल्यों का विकास होता है, बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन में दुःख व परेशानी का कारण मनुष्यों के अशुभ कार्यों को माना है, बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन में करूणा को मानव हित के लिए आवश्यक माना है।

भारती डी0 विजय (1999)[11] ''ने अपने शोध विषय ''स्वामी विवेकानन्द और जॉन डीवी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'' में पाया कि दोनों की दार्शनिक विचारधाराएं आज की आवश्यकताओं के अनुसार बहुत उचित हैं। विवेकानन्द का जीवन के प्रति दृष्टिकोण पूर्व और पश्चिम के संस्कृति का मिलन, आध्यात्मिक और भौतिक मूल्य, विज्ञान और वेदान्त तथा जॉन डीवी के प्रयोजनवादी दर्शन विज्ञान और प्रजातन्त्र पर आधारित आज की शिक्षा में ग्रहण करने वाले प्रमुख तत्व हैं।

4. समस्या कथन

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की मूल्यपरक् शैक्षिक विचारधार की प्रासंगिकता का नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

5. चरों का परिभाषीकरण

5.1. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य :—

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य (1911—1990) एक महान युगदृष्टा, संत, समाज सुधारक, दार्शनिक एवं शिक्षाविद् थे, जिन्होंने वेद, उपनिषद, गीता और भारतीय दर्शन को आधुनिक जीवन से जोड़ने का कार्य किया। वे अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं शांतिकुंज, हरिद्वार के संस्थापक थे। उनका विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, जीवन मूल्यों का संवर्धन और समाज की सेवा होना चाहिए। उन्होंने मूल्यपरक शिक्षा, आत्मनिर्माण, नैतिकता और आध्यात्मिकता पर आधारित शैक्षिक विचारधारा प्रस्तुत की, जो आज भी नई पीढ़ी को राष्ट्रनिर्माण और मानवता के उत्थान की दिशा में प्रेरित करती है।

5.2. मूल्यपरक :—

मूल्यपरक का अर्थ है जीवन और समाज में नैतिकता, आदर्शों तथा मानवीय मूल्यों को केंद्र में रखकर शिक्षा, व्यवहार और कार्यप्रणाली का निर्माण करना। यह व्यक्ति को केवल ज्ञानवान ही नहीं बल्कि संवेदनशील, उत्तरदायी और चरित्रवान बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करता है। मूल्यपरक दृष्टिकोण में सत्य, अहिंसा, सहयोग, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सेवा भावना, अनुशासन और करुणा जैसे गुणों को आत्मसात करना आवश्यक माना जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यपरकता विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का आधार है क्योंकि यह उन्हें सामाजिक उत्तरदायित्व, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण और मानवीय सहअस्तित्व के लिए तैयार करती है। इस प्रकार मूल्यपरकता जीवन—निर्माण का मूल आधार है।

5.3. शैक्षिक विचारधारा :—

शैक्षिक विचारधारा वह दार्शनिक एवं वैचारिक आधार है, जो शिक्षा की दिशा, उद्देश्य और पद्धति को निर्धारित करता है। यह विचारधारा समाज, संस्कृति, धर्म, विज्ञान और मानव जीवन के अनुभवों पर आधारित होती है। इसके माध्यम से यह तय किया जाता है कि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य क्या हो चरित्र निर्माण, ज्ञानार्जन, कौशल विकास या सामाजिक परिवर्तन। शैक्षिक विचारधारा शिक्षण के आदर्श, शिक्षक की भूमिका, विद्यार्थियों की प्रकृति तथा पाठ्यक्रम की संरचना को प्रभावित करती है। विभिन्न चिंतकों ने अपनी—अपनी दृष्टि से शैक्षिक विचारधाराएँ दी हैं, जिनमें मानवतावाद, प्रगतिवाद, आदर्शवाद और यथार्थवाद प्रमुख हैं।

5.4. नई शिक्षा नीति 2020 :—

नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार और परिवर्तन लाने वाली ऐतिहासिक नीति है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल, ज्ञान और मूल्य प्रदान करना है। इसमें 5+3+3+4 की नई शैक्षिक संरचना, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा पर जोर, मूल्यपरक शिक्षा, शोध और नवाचार को प्रोत्साहन, तकनीकी का समावेश तथा शिक्षक—प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। यह नीति शिक्षा को अधिक समावेशी, बहुआयामी और लचीला बनाती है, जिससे समग्र विकास, आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारतीय युवाओं की सहभागिता सुनिश्चित हो सके।

6. शोध के उद्‌देश्य

किसी कार्य को करने से पूर्व उसके उद्देश्यों का निर्धारण करना परम आवश्यक है क्योंकि उस कार्य की सफलता एवं असफलता भी उसके

उद्देश्यों पर आधारित होती है। अतः शोध अध्ययन को एक निश्चित दिशा देने के लिए शोधार्थी ने इस शोध प्रबन्ध के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये हैं।

1. पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन।
2. पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के दार्शनिक एवम् शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
3. पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल्य शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन करना।
4. पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा के विभिन्न आयामों जैसे उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, अनुशासन, शिक्षण विधि, विद्यालय, गुरु–शिष्य परम्परा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन करना।
5. नई शिक्षा नीति 2020 में शैक्षिक मूल्यों की प्रधानता एवं उनके महत्व के प्रावधानों का अध्ययन करना।
6. नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल्यपरक् शैक्षिक विचारों के क्रियान्वयन की सार्थकता एवं मूल्यांकन का अध्ययन करना।
7. नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल्यपरक् शैक्षिक विचारों के क्रियान्वयन की प्रासांगिकता का अध्ययन करना।

7. शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य का विषय दार्शनिक प्रकृति का है, दार्शनिक अनुसंधान के मुख्य रूप से दो उपागम होते हैं, एक किसी विचार प्रणाली का विवेचन और दूसरा, किसी महान विचारक के विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन। प्रस्तुत शोध कार्य में द्वितीय उपागम का अनुसरण किया गया है। शोध के लिए अनुसंधान की 'दार्शनिक विधि' का प्रयोग किया जायेगा।

8. शोध प्रक्रिया

शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी द्वारा निम्न साधन एवं स्रोतों को प्रयोग में लाया जायेगा।

(क) प्राथमिक स्रोत

(1) पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित साहित्य।

(2) नई शिक्षा नीति 2020 के मूल प्रति का अध्ययन।

(ख) द्वितीयक स्रोत

(1) अन्य लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों के द्वारा

(2) पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख द्वारा

(3) विभिन्न अध्ययनों के आधार पर

(4) विशिष्ट शिक्षा शिविरों, गोष्ठियों एवं सम्मेलनों के आधार पर।

(5) पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण योजना नामक मासिक पत्रिकाओं के अध्ययन द्वारा।

(6) नई शिक्षा नीति 2020 पर आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, परिचर्चाओं के निष्कर्ष पत्रों के अध्ययन द्वारा।

(7) नई शिक्षा नीति 2020 पर विभिन्न विद्वानों, शिक्षाविदों, संगठनों द्वारा प्रकाशित उनके शोध पत्र, शोध–लेख, एवं पुस्तकों का अध्ययन द्वारा।

9. शोध सीमांकन

शोधाथिनी ने अपनी क्षमता एवं उपलबध साक्ष्यों को ध्यान में रखकर निम्न क्रम में सीमित किया है।

(1) चूंकि प्रस्तुत शोध दार्शनिक प्रकृति का है। अतः विषय के सैद्धान्तिक पक्ष को ही छूने का प्रयास किया जायेगा।

(2) शोध कार्य पं0 श्रीराम शर्मा द्वारा लिखित साहित्य तथा उनसे सम्बद्ध साहित्य एवं पत्र–पत्रिकाओं पर ही आधारित होगा।

(3) प्रस्तुत शोध में शिक्षा, सामाजिक उत्थान, माता–पिता (अभिभावक) से सम्बन्धित मूल्यपरक् विचारों को लिया जायेगा।

(4) शिक्षा, अनुशासन, गुरू–शिष्य सम्बन्ध, पाठ्यक्रम, विद्यालय, शिक्षण विधियों सम्बन्धी विचारों को ही प्रस्तुत शोध में लिया जायेगा।

(5) इस शोध कार्य में पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल्यपरक् शैक्षिक विचारों का नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासांकगिकता का ही अध्ययन किया जायेगा।

10. अध्याय योजना

प्रथम अध्याय प्रस्तावना

- ❖ भूमिका
- ❖ शोध समस्या का कथन

- ❖ शोध समस्याओं में प्रयुक्त संकल्पनाओं का विवरण
- ❖ शोध के उद्देश्य
- ❖ शोध की अवधारणा
- ❖ शोध की आवश्यकता एवं सार्थकता
- ❖ शोध का परिसीमा

द्वितीय अध्याय	सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन
तृतीय अध्याय	शोध अभिकल्प एवं प्रविधि
चतुर्थ अध्याय	पं0 श्रीराम शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व
पंचम अध्याय	पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की मूल्यपरक शैक्षिक विचारधारा एवं शिक्षा नीति 2020 में अभिव्यक्त मूल्यपरक शिक्षा में समानता
षष्ठम् अध्याय	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में श्रीराम आचार्य की मूल्यपरक शिक्षा की प्रासंगिकता
सप्तम् अध्याय	शोध परिणाम, निष्कर्ष व सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैन, मनीषा (2019). *"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"*, जर्नल ऑफ इमरजिंग टेक्नॉलॉजीज़ एण्ड इन्नोवेटिव रिसर्च, वाल्यूम–6, अंक–5, मई 2019, आई.एस.एस. एन.: 23495162.
2. नम्रता एवं अविनाश (2019). पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का मूल्य–उन्मुखीकरण पर प्रभाव : एक अध्ययन, शोध पत्र, https://www.researchgate.net/publication/339379709.
3. देवी, संतोष एवं शर्मा, शिवाकान्त (2019). शिक्षा महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ साईंटिफिक रिसर्च इन साइंस एण्ड टेक्नोलोजी, वल्यूम–6, अंक–1, 2019, आई.एस.एस.एन: 2395602X.
4. कुमार, योगेश व उपाध्याय, सुशील (2019). आचार्य श्रीराम शर्मा और स्त्री शिक्षा पर अध्ययन, स्त्रीकाल(स्त्री का समय और सच), मासिक पत्रिका, दिसम्बर 2019, आई.एस.एस.एन.:2394093X.
5. यादव, उग्रसेन (2019). *"शिक्षा के महत्व और मूल्यों पर स्कूल और परिवार का सहयोग का अध्ययन"*, जर्नल ऑफ इमरजिंग टेक्नॉलोजिज़ एण्ड इन्नोवेटिव रिसर्च,, वाल्यूम–6, अंक–5, मई 2019, आई.एस.एस.एन.: 23495162.

6. असवाल, भरत सिंह (2017). *"मूल्य शिक्षा का जीवन में महत्व एवं आवश्यकता"*, श्रंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, वाल्यूम–4, अंक–10, पृ. 117–121 आई.एस.एस.एन.: 2349980X.

7. पाण्डेय, संतोष कुमार (2017). आर्यवृत्त शोध विकास पत्रिका, वॉल्यूम–8, संख्या–2, दिसम्बर 2017, आई.एस.एस.एन.:23472944, पृ.: 45–49।

8. कुमार, प्रवीन एवं बंसल, सुरक्षा (2013). *"वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में आचार्य श्रीराम शर्मा के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता"*, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ आर्टस एण्ड ऐजूकेशन रिसर्च, वल्यूम–2, अंक–2, मार्च 2013, आई.एस.एस.एनः 22789677.

9. नम्रता, बिहारिया एवं अविनाश, बिहारिया (2012). "पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का मूल्य–उन्मुखीकरण पर प्रभावः एक अध्ययन", देव संस्कृति, इण्टरडिसीप्लीनरी इण्टरनेशनल जर्नल, वॉल्यूम–1, वर्ष 2012, आई.एस.एस.एन.: 25824589.

10. भारती गीता (2012) : जैन शिक्षा दर्शन एवं बौद्ध शिक्षा दर्शन के सांस्कृतिक एवं शैक्षिक मूल्यों का तुल्नात्मक अध्ययन शोध प्रबन्ध (शिक्षा) महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।

11. भारती, डी0 विजय (1999) ''स्वामी विवेकानन्द और जॉन डीवी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'', एम0 एड0 लघु शोध–प्रबन्ध, काशी हिन्दू वि0 वि0, वाराणसी।